RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

हिंदी भाषा के माध्यम से संवाद

[1]महांतेश पाटील [2]डॉ. तबस्सुम खान

[1]शोधकर्त्ता, श्री सत्य साई विश्वविद्यालय ऑफ टेक्नौलाजी एण्ड मेडिकल साइन्सेस, सीहोर, एम.पी.

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
इतिहास, हिंदी.

ABSTRACT

भाषा एक सामाजिक माध्यम हैजिसके माध्यम से हम संवाद करते हैं एक दूसरे के साथ। भाषा हमारे सामाजिक अस्तित्व के लिए एक शक्तिशाली माध्यम है। हर भाषा लोगों के समूहउनकी भावनाओंउनके जीवन शैली की शैली का प्रतिनिधित्व करता है और उन्हें एक साथ जोड़ता है। इंडिया एक बहुभाषी राष्ट्र है और इसमें विविध संस्कृतियांधर्म और लोग शामिल हैं लेकिन यह एकजुट है। ऐतिहासिक रूप सेसंस्कृत देश को एकजुट करने के लिए जिम्मेदार था और अब हिंदी का अनुसरण किया जाता है।

प्रस्तावना

पिछले एक हजार साल सेइंडिया की हिंदी संचार की मुख्य भाषा रही है । हिंदी साहित्य खारी बोली की कविताओं की अवधारणाओं तक ही सीमित नहीं है। इसमें एक विशाल शामिल हप्रसादपंतनिरालाप्रेमचंदमुक्ति बोध आदि जैसे लेखकों की कविता की अवधारणाओं की विविधता तुलसीदासजयसीविद्यापति आदि के लेखन के रूप में हिंदी साहित्य अवदीबृजमैथली भाषाएं लेकिन मूल हिंदी साहित्य में एकीकृत है। हालांकि हिंदी ने इसका अधिग्रहण किया है संस्कृ त से औपचारिक और तकनीकी शब्दावलीहिंदी मुसलमानों के बीच भी बहुत लोकप्रिय थी यह दिल्ली और उसके आस–पास के स्थानों में संचार की मुख्य भाषा थी। मुसलमानों ने सीखा हिंदी में अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी और इसमें बड़ी संख्या में फारसीअरबी और तुर्की शामिल थी इसके लिए शब्द मुगलों के विस्तार के रूप में हिंदी ने एक लिंक भाषा के गठन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई संतों ने हिंदी भाषा का उपयोग अपनी विचार धाराओं को प्रसारित करने के लिए भी किया लोग धीरे–धीरे हिंदी ने भारत के सभी दिशाओं में लोकप्रियता हासिल की और स्वीकार्यता प्राप्त की लिंक भाषा भारत को एकीकृत करने में हिंदी की भूमिका को समझने के लिए पर एक नजर धर्म संस्कृति व्यापार और वाणिज्य की स्थिति की ऐतिहासिक और आधुनिक स्थिति होना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने अपने "हिन्दी एवं उर्दू का अद्वैत" शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स' को 'ह' रूप में बोला जाता था। जैसे संस्कृत के 'असुर' शब्द को वहाँ 'अहुर' कहा जाता था। अफ़ग़ानिस्तान के बाद सिन्धु नदी के इस पार हिन्दुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिन्द', 'हिन्दुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को 'एडजेक्टिव' के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का'। यही 'हिन्दीक' शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इन्दिके', 'इन्दिका', लैटिन में 'इन्दिया' तथा अंग्रेज़ी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवँ फ़ारसी साहित्य में भारत (हिंद) में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान–ए–हिन्दी', पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद अरबी–फारसी बोलनेवालों ने 'ज़बान–ए–हिन्दी', 'हिन्दी जुबान' अथवा 'हिन्दी' का प्रयोग दिल्ली–आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया। भारत के गैर–मुस्लिम लोग तो इस क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा–रूप को 'भाखा' नाम से पुकराते थे, 'हिन्दी' नाम से नहीं।

भाषा भावाभिव्यक्ति एवं विचार–विनिमय का सांकेतिक साधन है। जहां तक भावाभिव्यक्ति की बात है यह कार्य तो संसार के सभी प्राणी किसी–न–किसी रूप में करते हैं। जैसे– कुत्तें भों–भों करके, बिल्ली म्यांउ म्यांउ करके और चूहें चूं–चूं करके। चिड़ियों की चीं–चीं और कोयल की कू–कू किसने नहीं सुनी। छोटे से छोटे जीव में भी यह क्रिया देखी जाती है। चीटियां एक–दूसरे से मुहं मिलाकर न जाने क्या अभिव्यक्त करती हैं, यह सभी ने देखा है। व्यापक अर्थ में संसार के विभिन्न प्राणियों द्वारा प्रयुक्त भावाथिव्यक्ति के इन साधनों–अंग–प्रत्यंगों के संचालन, भाव–मुद्राओं और ध्वनि संकेतों को भाषा कहते हैं। इस अर्थ में संसार के सभी प्राणियों की अपनी–अपनी भाषाएं हैं।

भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान

भाषा मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वन एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। व्यक्त नाद की वह समष्टि जिसकी सहायता से किसी एक समाज

RRIJM 2015, All Rights Reserved

या देश के लोग अपने मनोगत भाव तथा विचार एक दूसरे पर प्रकट करते हैं। मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। बोली। जबान। वाणी। विशेष इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी तरह नहीं आती। भाषाविज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं के आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाकों के भी अनेक वर्ग उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथाव बोलियों को रखा है। जैसे हमारी हिंदी भाषा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है; और ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। पास पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता है; और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। यही बात बड़ी बड़ी भाषाओं में भी है जिनका पारस्परिक साम्य उतना अधिक तो नहीं, पर फिर भी बहुत कुछ होता है। संसार की सभी बातों की भाँति भाषा का भी मनुष्य की आदिम अवस्था के अव्यक्त नाद से अब तक बराबर विकास होता आया है; और इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कुत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है।

सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी तरह सीखे नहीं आती। भाषाविज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं के आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाओं के भी अनेक वर्ग–उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथाव बोलियों को रखा है। जैसे हिंदी भाषा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है; और ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। पास पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता है; और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। यही बात बड़ी बड़ी भाषाओं में भी है जिनका पारस्परिक साम्य उतना अधिक तो नहीं, पर फिर भी बहुत कुछ होता है।

संसार की सभी बातों की भाँति भाषा का भी मनुष्य की आदिम अवस्था के अव्यक्त नाद से अब तक बराबर विकास होता आया है; और इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कृत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है।

उपसंहार

प्रायः भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिये लिपियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा और लिपि, भाव व्यक्तीकरण के दो अभिन्न पहलू हैं। एक भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है और दो या अधिक भाषाओं की एक ही लिपि हो सकती है। उदाहरणार्थ पंजाबी, गुरूमुखी तथा शाहमुखी दोनो में लिखी जाती है जबकि हिन्दी, मराठी, संस्कृत, नेपाली इत्यादि सभी देवनागरी में लिखी जाती है।

'भाषा' के अर्थ में 'हिंदी' शब्द का प्रारंम्भिक प्रयोग भी फारस और अरब में ही छठी शताब्दी ई.पू. से मिलता हैद्य भारत में भी इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुसलमानों द्वारा ही किया गया द्य मुसलमानों का सम्बन्ध मूलतः मध्य देश में था अतः इस क्षेत्र की भाषा को उन्होंने 'जबाने हिंदी' अथवा 'हिंदी जबान कहा द्य प्रराम्भा में इसका प्रयोग मुसलमानों की 'हिन्दवी के लिए हुआ द्य फिर यह 'हिन्दवी' अथवा 'दकिखनी' का समानार्थी हो गया द्य सन् 1800 के बाद अंग्रेजो और फोर्ट विलियम कॉलेज के द्वारा यह ऐसी भाषा क रूप में प्रचारित किया गया जिसकी लिपि देवनागरी थी और जो शब्द दृ समूह की द्रष्टि से संस्कृत की और झुकी हुई थी द्य आज भी यह शब्द लगभग इसी अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है।

संदर्भ

1. भारतीय दर्शन–बलदेव उपाध्याय
2. नारद भक्ति सूत्र – सूत्र संख्या
3. ऋगवेद
4. आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य – डॉ0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल, भूमिका
5. प्रामणिक हिन्दी कोष–रामचन्द वर्मा